



# आर्य्य मार्तण्ड



❖❖ आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक ❖❖

**वैदिक संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प – आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क, जयपुर**

वर्ष: 88 अंक 24  
अश्विन कृष्ण त्रयोदशी  
विक्रम संवत् 2071  
कलि संवत् 5115  
21 सितम्बर से 5 अक्टूबर 2014 तक  
दयानन्दार्च 190  
सृष्टि संवत् 1, 96, 08, 53, 115  
**मुख्य सम्पादक :**  
**पं. अमर सिंह आर्य,** 9214586018  
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान  
**संपादक मंडल:**  
स्वामी सुप्रेमानन्द सरस्वती, सीकर  
श्री ओम मुनि, ब्यावर  
श्री विजय सिंह भाटी, जोधपुर  
डॉ. सुधीर आर्य, बगरू  
आर्य शिरोमणि पं. विनोदी लाल दीक्षित  
श्री हरिपाल शास्त्री, अलवर  
श्री ओम प्रकाश विद्यावाचस्पति, जयपुर  
श्री अर्जुन देव चड्ढा, कोटा  
श्रीमती अरुणा सतीजा, जयपुर  
श्री सत्यपाल आर्य, अलवर  
श्री वृजेन्द्र देव आर्य, अलवर  
**प्रकाशक:**  
आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान  
राजापार्क, जयपुर  
दूरभाष- 0141-2621879  
प्रकाशन: दिनांक 1 व 15  
पत्र व्यवहार का अरथाई पता  
अमर मुनि वानप्रस्थी  
सम्पादक आर्य्य मार्तण्ड, शेह का लीला  
केडलगंज, अलवर (राज.)  
मोबाईल- 9214586018  
**मुद्रक:**  
राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशियेट्स, जयपुर  
**प्राफिक्स :**  
**भार्गव प्रिन्टर्स, दासकूटा, अलवर**  
Email: bhargavaprinters@gmail.com  
Email: aryamartand@gmail.com  
एक प्रति मूल्य : 5 रुपया  
सहायता शुल्क : 100 रुपया

## हिन्दी दिवस पर विशेष

### हिन्दी प्रेमी अपने बालक व बालिकाओं को इंग्लिश माध्यम स्कूलों में पढ़ाना बंद करें।

अमर मुनि

प्रतिवर्ष की भाँति ये सप्ताह हिन्दी दिवस के रूप में सारे भारत वर्ष में मनाया जा रहा है सारे ही देश में काव्य गोष्ठियाँ हिन्दी पर सेमिनार, कवि सम्मेलन व लेखन के माध्यम से हिन्दी के विकास पर चर्चा हो रही है। अखबारों, पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से समाचार जानने को मिल रहे हैं। हमारे देश के प्रधानमंत्री श्रीयुक्त नरेन्द्र मोदी जहाँ भी विदेश की यात्रा कर रहे हैं वहाँ वो अपना भाषण हिन्दी में ही दे रहे हैं। इसके लिए वे साधुवाद के पात्र हैं। भारत के संविधान निर्माताओं ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया। लेकिन 15 वर्ष तक अंग्रेजी को राजभाषा स्वीकार कर भारतवासियों के साथ छल किया गया। उसके पश्चात संसद में यह प्रस्ताव लाया गया कि सभी राज्य हिन्दी को स्वीकार कर लेंगे तभी हिन्दी राष्ट्रभाषा बन पावेगी यह धोखा नहीं तो और क्या है। भारत में लगभग सभी प्रांतों में प्रांतीय भाषाएँ बोली जाती हैं लेकिन सभी भारतवासियों की सम्पर्क व राजकीय काम-काज की भाषा हिन्दी होना अनिवार्य है तभी सम्पूर्ण राष्ट्र एकता के सूत्र में पिरोया जा सकेगा।

महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने राष्ट्रीय एकता का सूत्र एक भाषा-एक धर्म- एक पूजा पद्धति को बताया है। उन्नीसवीं शताब्दी में एवं अभ्युदयशील भारत के निर्माण में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती तथा उनके आर्य समाज का स्थान सर्वमान्य तथा बहुश्रुत है। स्वामी दयानन्द सरस्वती का चरित्र इतना महान, बहुमुखी तथा व्यापक रहा कि उनसे हिन्दी के अनेक साहित्यकारों ने प्रेरणा लेकर अपनी कृतियों का निर्माण किया। स्वामीजी ने हिन्दी साहित्य को न केवल प्रभावित ही किया अपितु उसे एक नई दिशा भी दी है। वे आधुनिक हिन्दी साहित्य के पिता और युग प्रवर्तक भारतेन्दु हरिश्चंद के समकालीन थे। भारतेन्दु स्वामीजी के विज्ञापनों (भाषण व लेखों) को अपनी पत्रिकाओं में ससम्मान स्थान देते हैं। उनके द्वारा लिखा गया सत्यार्थ प्रकाश भी आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य को प्रस्थानिक बिन्दू के रूप में ग्रहण किया जा रहा है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भी हिन्दी गद्य प्रसार में आर्य समाज के योगदान को विशेष रूप से रेखांकित करते हुए लिखा कि शिक्षा के आंदोलन के साथ ईसाई प्रचार एवं पैगम्बरी एकेश्वरवाद को रोकने का कार्य महर्षि स्वामी दयानन्द के वैदिक एकेश्वरवाद पर भाषण लेखन ने किया। वे अनेक नगरों में घूम-घूम कर वैदिक धर्म का प्रचार सरल हिन्दी भाषा में करते थे उससे हिन्दुओं में चेतना पैदा हुई। वेदों का भाष्य सरल हिन्दी में

आर्य्य मार्तण्ड

माता और पिता आठ-आठ वर्ष के पुत्र वा कन्याओं को विद्याभ्यास, ब्रह्मचर्य-सेवन और अच्छी शिक्षा किये जाने के लिए विद्वान् और विदुषी स्त्रियों को सौंप दें। वे भी विद्या-ग्रहण करने में नित्य मन लगावें और पढ़ानेवाले भी विद्या और अच्छी शिक्षा देने में नित्य प्रयत्न करें।

(1)



करके जनमानस तक पहुँचाया। स्वामीजी के भाष्य की यह विशेषता रही कि वे रूढ़िवादी परम्परा से हटकर वेदों का योगिक अर्थ जनमानस के सम्मुख रखा। इसी कारण आमजन वेदों को पढ़ने और समझने लगे। आज लाखों व्यक्ति प्रतिदिन वेद का स्वाध्याय करते हैं। स्वामीजी के पत्रों के द्वारा ही हिन्दी में पत्र साहित्य विद्या का श्री गणेश हुआ। हिन्दी गद्य प्रवाह और शैली निर्माण की दृष्टि से स्वामी जी चिरस्मरणीय रहेंगे। हिन्दी साहित्य में आर्य समाज को सर्वाधिक अभिव्यक्ति द्विवेदी युग में मिली। इस युग में हिन्दी साहित्य में जो उपदेशात्मकता, पवित्रता, नैतिकता तथा सदाचरण की बातें आयी वे प्रायः आर्य समाज की देन थी। द्विवेदी युग के प्रवर्तक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने लिखा मेरे हृदय में श्री स्वामी दयानन्द पर अगाध श्रद्धा है वे बहुत बड़े समाज संस्कर्ता वेदों के बहुत बड़े ज्ञाता तथा समयानुसार भाष्यकर्ता एवं आर्य संस्कृति के पोषक थे जिन्होंने आर्य समाज की स्थापना कर देश, अपने धर्म और भाषा को बहुत लाभ पहुँचाया।

मेरे देशवासियों अगर हम महर्षि स्वामी दयानन्द के सपनों का भारत निर्माण करना चाहते हैं। तो हमें हमारे देश में एक भाषा हिन्दी को अपनाना पड़ेगा। उसके लिए सर्वप्रथम हम यही प्रयास करें कि हम अपने बालक व बालिकाओं को अंग्रेजी माध्यम व कॉन्वेंट स्कूल व कॉलेजों में पढ़ाना बंद करें। आर्य संस्थान जो अंग्रेजी माध्यम से स्कूल चलाते हैं वह बंद करें। सभी विषयों का सरल हिन्दी में पाठ्यक्रम तैयार करें उन्हें विद्यालयों में पढ़ाया जाय। आज हिन्दी में संसार का सबसे बड़ा शब्दकोश है जिसमें करीब अपने मौलिक 60 लाख शब्द हैं। यह विश्व की सबसे सम्पन्न भाषा है इसके प्रचार व प्रसार में अपना सर्वस्व जीवन लगा दें।

- संपादक

## पत्नी के कर्तव्य

स.प्र. समु. ४ में स्वामीजी मनु का श्लोक उद्धृत करते हुए पत्नी के कर्तव्य बताते हैं-

सदा प्रहृष्टया भाव्यं गृहकृत्येषु दक्षया।

सुसंस्कृतोपस्करया व्यये चामुक्तहस्तया। मनु. ५/१५०

“स्त्री को योग्य है कि अति प्रसन्नता से घर के कामों में चतुराई बर्ते। सब पदार्थों के उत्तम संस्कार तथा घर की शुद्धि रखे। सब चीजें पवित्र और पाक इस प्रकार बनावे जो ओषधिरूप होकर शरीर व आत्मा में रोग को न आने दें। जो-जो व्यय हो उसका हिसाब यथावत् रख के पति आदि को सुना दिया करे। घर के नौकर-चाकरों से यथायोग्य काम लेवे। घर के किसी काम को बिगड़ने न देवे।”

संस्कार विधि की गृहस्थाश्रमविधि में अथर्ववेद के मंत्र उद्धृत करते हुए स्वामीजी ने पत्नी के निम्नलिखित कर्तव्य निर्दिष्ट किये हैं-

“हे वरानने! तू अच्छे मंगलाचरण करने तथा दोष और शोकादि से पृथक् रहनेहारी, गृहकार्यों में चतुर और तत्पर रहकर उत्तम सुखयुक्त हो के पति, श्वसुर और सास के लिए सुखकर्त्री और स्वयं प्रसन्न हुई इन घरों में सुखपूर्वक प्रवेश कर (अथर्व १४/२/२७)।”

स्वामीजी के वेदभाष्य से पत्नियों के निम्नलिखित प्रमुख कर्तव्य ज्ञात होते हैं-

“स्त्रियों को चाहिए कि अपने-अपने घर में ऐश्वर्य की उन्नति, श्रेष्ठ रीति और दुष्टों का ताड़न निरन्तर किया करें (ऋ. भा. १/१२३/५)।”

“हे स्त्रियो!” जैसे प्रातःवेला सम्पूर्ण प्राणियों को जगाकर कार्यों में प्रवृत्त करती है, वैसे ही पतिव्रता होकर पतियों के साथ अनुकूलता से बर्त प्रशंसित होओ (ऋ. भा. ३/६/१/१)।”

“वही स्त्री पति को पुरुषार्थी, धार्मिक, लोभी और कामातुर जानकर दोषों के निवारण और गुणों के ग्रहण करने के लिए प्रेरणा करती है वही पति आदि की कल्याण करने वाली होती है (ऋ. भा. ५/१६१/७)।

“जैसे प्रभातवेला अपने प्रकाश से अंधकार का निवारण करती है,

आर्य मार्तण्ड

अच्छी शिक्षा के बिना मनुष्यों के सुख के लिए और कोई भी आश्रय नहीं है। इसलिये सबको उचित है कि आलस्य और कपट आदि कुकर्मों को छोड़के विद्या के प्रचार के लिए सदा प्रयत्न किया करें।

वैसे ही विद्यायुक्त स्त्रियाँ अपने उत्तम स्वभाव से दोषों का निवारण करके उत्तम प्रकार संस्कारयुक्त अन्न आदि से सबकी उत्तम प्रकार रक्षा करें (ऋ. भा. ४/५२/६)।”

जो स्त्रियाँ विदुषी होकर सत्य, धर्म और उत्तम स्वभाव का स्वीकार करके मेघ के सदृश सुखों की वृष्टि करती हैं वे बड़े सुख को प्राप्त होती हैं (ऋ. भा. ५/६६/५)।”

“हे स्त्रियो! तुम चतुरता से सब पति आदि को संतोष देकर, घर के कार्यों को यथावत् अनुष्ठान कर, अति विषयासक्ति को छोड़ और सुंदर शोभायुक्त होकर सदैव पुरुषार्थ से धर्मयुक्त कामों को सूर्य के समान प्रकाशित करो (ऋ. भा. ६/६४/२)।”

“घर के काम में कुशल स्त्री को चाहिए कि घर के भीतर के सब काम अपने अधीन रख के ठीक-ठीक बढ़ाया करे। (य. भा. ११/६२)।”

## पति-पत्नी का पारस्परिक व्यवहार

स्वामीजी ने वेद व मनुस्मृति के वचन उद्धृत करते हुए गृहस्थों का ध्यान इस ओर भी आकृष्ट किया है कि पति-पत्नी का पारस्परिक व्यवहार अत्यन्त प्रेममय और मधुर होना चाहिए। सं. वि., गृहाश्रम विधि में मनु के श्लोक देते हुए वे लिखते हैं-

सन्तुष्टो भार्यया भर्ता भर्ता तथैव च।

यस्मिन्नेव कुल नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम्॥ मनु ३/६०

“हे गृहस्थो! जिस कुल में भार्या से पति प्रसन्न और पति से भार्या सदा प्रसन्न रहती है उसी कुल में निश्चित कल्याण होता है और दोनों अप्रसन्न रहें तो उस कुल में नित्य कलह वास करता है।”

स्त्रियाँ तु रोचमानायां सर्वं तद् रोचते कुलम्।

तस्यां त्वरोचमानायां सर्वमेव न रोचते॥ मनु ३/६२

“और जो पुरुष स्त्री को प्रसन्न नहीं करता, तो उस स्त्री के अप्रसन्न रहने से सब कुल-भर अप्रसन्न शोकातुर रहता है, और जब पुरुष से स्त्री प्रसन्न रहती है, तब सब कुल आनन्दरूप दीखता है।”



अपने वेदभाष्य में भी स्वामीजी ने इस सम्बन्ध में विचार प्रकट किये हैं। उनके कुछ वचन यहाँ दिये जा रहे हैं—

“जैसे रात्रि में नक्षत्र-लोक चन्द्रमा के साथ और प्राण शरीर के साथ वर्तते हैं, वैसे विवाह करके स्त्री-पुरुष आपस में बर्ता करें। (ऋ.भा. १८५०८/२)

“जैसे चक्र के समान घूमते हुए रात्रि-दिन परस्पर संयुक्त वर्तते हैं, वैसे विवाहित स्त्री-पुरुष अत्यन्त प्रेम के साथ वर्ता करें (ऋ.भा. १/६२/८)।

“जैसे विदुषी विद्वानों की पत्नियों स्वधर्म-व्यवहार से अपने पतियों को प्रसन्न करती हैं, उसी प्रकार पुरुष अपनी स्त्रियों को निरन्तर प्रसन्न करें (य.भा. ६/३४)।

“स्त्री-पुरुष ऐसे व्यवहार में वर्तें कि जिससे उनका परस्पर भय और उद्वेग नष्ट हो, आत्मा का दृढ़ उत्साह, प्रीति, गृहाश्रम-व्यवहार की सिद्धि और ऐश्वर्य बढ़े। वे दोषों तथा दुःखों को दूर कर चन्द्रमा के समान एक-दूसरे के आद्यादक हों (य.भा. ६/३५)।”

“पूर्ण युवा पुरुष जिस ब्रह्मचारिणी कुमारी कन्या के साथ विवाह करे उसका अप्रिय कभी न करे। कन्या पूर्ण युवती स्त्री जिस कुमार ब्रह्मचारी के साथ विवाह करे उसका अनिष्ट कभी मन से भी न विचारे। इस प्रकार दोनों परस्पर प्रसन्न हुए प्रीति के साथ घर के कार्य संभालें (य.भा. ११/३९)।”

“स्त्री की सम्मति के बिना पुरुष और पुरुष की आज्ञा के बिना स्त्री कुछ भी काम न करे (य.भा. १२/६५।)।”

“जैसे पुरुष स्त्री को अच्छे कर्मों में नियुक्त करे, वैसे स्त्री भी अपने पति को अच्छे कर्मों में प्रेरणा करे, जिससे निरन्तर आनन्द बढ़े (य.भा. १४/१२)।”

साभार - वैदिक नारी से

## वैदिक वीरांगना दल, जयपुर

4 सितम्बर, 2014 को वैदिक वीरांगना दल की ओर से राजस्थान नेत्रहीन कल्याण संघ, लंगर के बालाजी, गणगौरी बाजार, जयपुर में नेत्रहीन विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विकास के लिए एक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया जिसमें विद्यालय के बच्चों ने भजन, गीत आदि प्रस्तुत किए तथा संस्था की सचिव श्रीमती दुर्गा शर्मा ने बच्चों को निराशा से उभरने की जानकारी दी व जीवन के मूल्यों को समझाते हुए प्रगति की राह बताई और नैतिक उत्थान की ओर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी व गुरु विरजानंद के समकक्ष बच्चों के जीवन को जोड़ा।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती कमलेश डंगायच ने की व कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती आभा तोमर थी। इस कार्यक्रम में बच्चों को संस्था द्वारा नाश्ता व आर्थिक सहयोग भी प्रदान किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से शहर की गणमान्य महिलाएं श्रीमती अंजु मंगल, श्रीमती किरण बंसल, श्रीमती सीमा पारीक, श्रीमती शर्मिला बोहरा, सुश्री आंचल बोहरा, श्रीमती नीरजा शर्मा व श्रीमती कल्पना शर्मा ने भाग लिया। संस्था की राष्ट्रीय अध्यक्ष सुश्री अनामिका शर्मा ने उपस्थित सभी लोगों का आभार व्यक्त किया।

—अनामिका शर्मा राष्ट्रीय अध्यक्ष

आर्य मार्तण्ड

ये हमारे शिक्षक ही हैं, जो रचनात्मक क्रियाओं और अपने ज्ञान से हमारे अंदर आनंद पैदा करते हैं। इस आनंद में याद किया गया

विषय व्यक्ति अपने अंतिम समय तक नहीं भूल सकता। — एल्बर्ट आइंस्टीन, वैज्ञानिक

## केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का

36 वां वार्षिक राष्ट्रीय अधिवेशन सोल्लास सम्पन्न

लवजिहाद व धर्मान्तरण से बड़े ही दूरगामी

गम्भीर परिणाम होंगे

—डा.अनिल आर्य, राष्ट्रीय अध्यक्ष  
नई दिल्ली। रविवार, 7 सितम्बर 2014, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, नई दिल्ली के 36 वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में “राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी सम्मेलन” का भव्य आयोजन योग निकेतन, पंजाबी बाग, दिल्ली में किया गया। सम्मेलन में देश के लगभग 14 प्रान्तों से 1500 से अधिक आर्य प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य ने कहा कि आज लवजिहाद के रूप में जो छद्म युद्ध चल रहा है, वह राष्ट्र के अस्तित्व के लिये घातक है, इसके बड़े ही दूरगामी गम्भीर परिणामों की कल्पना भी नहीं की जा सकती। डा.आर्य ने कहा कि धर्मान्तरण होने से विचार, सोच व राष्ट्रीयता ही बदल जाती है अतः केन्द्र सरकार को धर्म परिवर्तन पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिये अन्यथा कश्मीर की तरह हिन्दू यहां भी अल्पसंख्यक हो जायेगा। जिससे अलगाववाद व आतंकवाद को बढ़ावा मिलेगा तथा इनका मुकाबला करना और अधिक कठिन हो जायेगा। सरकार को देश हित में इस पर अविलम्ब कार्यवाही करनी चाहिये।

सम्मेलन में आर्य समाज के प्रचार प्रसार को गति देने, चरित्रवान युवा पीढ़ी तैयार करने, वेदों का प्रचार प्रसार करने, आरक्षण जाति आधारित न होकर आर्थिक आधार पर हो, आतंकवाद — लवजिहाद, नशाखोरी, बढ़ती अश्लीलता पर विचार किया गया। समारोह का उद्घाटन ‘ओ3म’ ध्वज फहरा कर समाजसेवी श्री धर्मदेव खुराना ने किया।

डॉ. अनिल आर्य

## आर्य समाज, बाड़ी द्वारा उपलक्ष्य में

६: दिवसीय वार्षिकोत्सव एवं ऋग्वेद यज्ञ, संगीतमय वैदिक प्रवचन

अग्रवाल पंचायती धर्मशाला, बाड़ी में छः दिवसीय ऋग्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन दिनांक 19 से 24 सितम्बर 2014 तक आर्य समाज, बाड़ी के वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में हो रहा है। इस अवसर पर स्वामी कैवलानन्द जी सरस्वती (वाराणसी), विदुषी बहिन अंजली आर्या, (करनाल, हरि.), बहिन ख्याति शर्मा (गुरुकुल, खेरली), बहिन प्रियंका भारती गुरुकुल (खेरली) पधार रहे हैं।—

कुसुम मित्तल, प्रधान

(3)



## नारी इतनी असुरक्षित क्यों?

नारी ईश्वर की सर्वोत्तम रचना है। यह सुंदर है, कोमल है, सौम्य है, धीर है, सागर सी गम्भीर है। सबसे बढ़कर यह एक शक्ति है। ईश्वरीय कृति का सब से आधुनिक मॉडल है। नयी चीज में उत्कृष्टता व नवीनता होती है जो सबको आकर्षित करती है। यह अधिक मूल्यवान एवं गुणवान भी होती है। इसीलिये महान कवियों ने पुरुष की अपेक्षा नारी से सम्बन्धित अधिक सहित्य की रचना की है। एक विद्वान ने नारी के गुणकर्म एवं स्वभाव के आधार पर सौ नामों से अधिक नामों का वर्णन किया है।



सर्वगुण सम्पन्न होते हुए भी नारी की स्थिति मात्र वैदिक युग को छोड़कर सदा से ही दयनीय एवं शोषित रही है। महाभारत के युद्ध में अनगिनत योद्धाओं के मारे जाने के कारण स्त्रियाँ विधवा हो गईं। वह बेबस, बेसहारा और बेचारी हो गईं। कुछ सामाजिक व धार्मिक कारणों के कारण न केवल भारत बल्कि समस्त विश्व पुरुष प्रधान हो गया। इस्लाम धर्म में तो नारी मात्र भोग की वस्तु समझी जाती थी। मध्यकाल नारी जाति के लिये अति उत्पीड़न का काल था। बाल विवाह, बाल विधवा, बहुपत्नी विवाह तथा सामाजिक संकीर्णता के कारण घर परिवार में ही परिवार के पुरुषों द्वारा व्याभिचार होता था। धन्य है नारी जाति सब कुछ सहा परन्तु अपने अस्तित्व को नहीं मिटने दिया।

19वीं शताब्दी में महर्षि देव दयानन्द पहली बार नारी जाति का मसीहा बनकर आया। वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने बालिकाओं की बिक्री पर रोक लगाई। नारी को शिक्षा प्राप्त करने तथा वेद पढ़ने का अधिकार दिलाया ताकि वेदज्ञान से नारी का आत्मिक बल तथा तेजस्व इतना बढ़ जाए किसी पर पुरुष का छूना तो दूर की बात हो उसकी ओर किसी की आँख उठाकर देखने की भी हिम्मत न हो यह था नारी सशक्तीकरण का पहला कदम और महर्षि का सपना।

बच्चों के भविष्य को सुंदर बनाना कोई एक दिन की बात नहीं बल्कि वर्षों-वर्षों की साधना है। बच्चा पिता की अपेक्षा माँ के अधिक सम्पर्क में रहता है। आठ वर्षों तक बच्चों का उठना, बैठना, सोच-विचारधारा तथा बच्चे के चिंतन आदि को समीचीन बनाना सब का नैतिक कर्तव्य है। क्योंकि आज का बच्चा ही तो कल का पुरुष है नागरिक है। इसीलिये सत्य है बच्चों का पालन-पोषण किसी संत की तपस्या तथा मन्दिर की पूजा से कम नहीं परन्तु यह पूजा व तपस्या घर-घर से मिटती जा रही है जो सर्वनाश का प्रतीक है। बच्चों को तभी संस्कारवान बनाया जा सकता है जब माँ बाप स्वयं संस्कारवान होंगे। बच्चों को वह सब देखने का कभी अवसर मत दो जिसे आप स्वयं करना या देखना नहीं चाहते।

समय सदा अपनी चाल चलता रहता है। विधाता को कुछ और मंजूर था भारतीय वेदों की ओर न लौटकर पाश्चात्य सभ्यता की ओर मुड़ गये। भौतिक सुखों को प्रदान करने वाले नये-नये अविष्कारों ने हमारी युवा पीढ़ी को चकाचौंध कर दिया। इसी समय में सिनेमा का आविष्कार हुआ। इन कलाकारों की अदाओं तथा इश्क सम्बन्धी दृष्यों ने युवाओं के मस्तिष्क को विकृत करना शुरू कर दिया। इससे खुलापन बढ़ा, पुरुष-नारी का भेद मिटा, आर्य मार्तण्ड

वेशभूषा बदली, शिक्षा प्रणाली बदली, सहशिक्षा का प्रचलन बढ़ा, विचार बदले, बदल गई सारी भारतीय संस्कृति। नारी ने पुरुष के समान सभी ऊँचे-ऊँचे पदों पर अधिकार कर लिया। वह बन गई स्वतंत्र भारत की स्वतंत्र नारी। परिणाम स्वरूप नारी में से ईश्वर प्रदत्त एवं समाजकीय गुणों का लोप होता गया। संयुक्त परिवार टूटे जो बच्चे की प्रथम पाठशाला थी। रिश्ते टूटे संवेदनाएँ व मर्यादाएँ मिटी। केवल-मात्र रह गई स्वतंत्र नारी। भौतिकता रंग लाई। घर में पैसा बढ़ा अतिसुख में वह भूल गई अपने मुख्य कर्तव्य को लक्ष्य को जिसके लिये ईश्वर ने उसे इस धरती पर भेजा था। 'माता निर्माता भवति'

अति सुखों में पले बच्चे संस्कार विहीन होने लगे। अतः फूल शूल बन गये। नैतिकता खत्म हुई, चरित्र विहीन मात्र मांस के लोथड़े सम बच्चों अविद्या के घोर अंधकार में खो गये। आज इसी अविद्या का परिणाम है कि आज नारी सब कुछ होते हुए भी घर-बाहर कहीं भी सुरक्षित नहीं है। प्रातः उठते ही, प्रत्येक समाचार पत्र में तथा टीवी के प्रत्येक चैनल पर मुख्य समाचार होता है 'गैंग रेप', 'हत्या' कई नये कठोर कानून बनाये गये, जनता ने इसके विरुद्ध प्रदर्शन कर रोष प्रगट किया कई हिंसक घटनाएँ व आगजनी हुई परन्तु 'गैंग रेप' की घटनाएँ हैं कि रुकने का नाम नहीं ले रही हैं क्यों? अपने दृष्टिकोण के आधार पर इन घटनाओं के मुख्य कारणों को प्रकाश में लाने का प्रयास कर रही हूँ। पहला एवं मुख्य कारण है समाज के अधिकांश लोगों का संस्कार विहीन होना, लड़के-लड़कियों का अति खुलापन, लड़के-लड़कियों में शादी से पूर्व आपसी सम्बन्ध, टीवी व सिनेमा जो बाल कोमल मस्तिष्क को समय से पूर्व प्रौढ़ बना रहे हैं। माता-पिता की अति व्यस्तता, अतिधनी होने के कारण बच्चों में अनुशासन हीनता, उच्च पदों पर आसीन व्यक्तियों के सामने नारी कर्मचारी की विवशता, रईसजादों की बिगड़ी संताने तथा कुछ अनपढ़, उदण्ड, आवारा गुण्डे तथा समाज कंटक आदि व कुछ अन्य कारण भी हो सकते हैं।

बड़े दुःख से लिखना पड़ रहा है कि प्रशासन ऐसे संवेदनशील मामलों में क्यों उदासीन है बेबस है। कारण कुछ भी हो अपराध तो अपराध है। अपराधों को रोकने का एकमात्र इलाज है कठोर तुरन्त तथा न्यायपूर्वक दण्ड व्यवस्था। डण्डा सबको कर देता है ठण्डा। डण्डे के भय से भूत भी भागता है। वसंत कुंज दिल्ली की दिल को दहला देने वाली दुर्घटना के अपराधी अभी तक विचाराधीन है। ऐसे मुकदमों पर तो बहस की आवश्यकता ही नहीं। प्रत्यक्ष को प्रमाण की क्या आवश्यकता। कुछ दरिन्दों की दरिन्दगी से जनमानस रो उठा परन्तु सरकार नहीं हिली। यही मुख्य कारण है कि अपराधी निडर होकर अपराध कर रहे हैं। आज शायद ही कोई ऐसा विभाग या पद होगा जिसके दामन पर दाग न हो। इसका यह अर्थ नहीं कि सागर में एक बूंद गंदी मिलने से सारा सागर ही गंदा हो गया।

पुनः मैं अपने विचारों को दोहराते हुए लिख रही हूँ कि 'माता निर्माता भवति' के भाव से प्रेरित होकर प्रत्येक माँ इस गुरुत्तर उदरदायित्व को अपने कंधों पर धारण करते हुए स्वयं तो संस्कारवान हो ही अपने बच्चों को चाहे वह लड़की हो या लड़का संस्कारवान बना कर कुंदन तुल्य अमूल्य बना दे। मानवीय गुणों से परिपूर्ण कर बच्चों को परिवार समाज व राष्ट्र को समर्पित कर अपने ऋण से उद्ग्रहण होकर ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए कह सकें तूने मुझे सुंदर बनाया मैंने तेरे संसार को सच्चे मानव से सुसज्जित कर दिया। हे ईश्वर तूने अपना कर्तव्य पूरा किया मैंने अपना फर्ज निभाया। ओ३म् शांति शांति शांति

- टंकाराश्री अरुणा सतीजा, जयपुर

शिक्षा का मतलब किसी घड़े को भरना नहीं है। बल्कि यह प्रकाश को प्रज्ज्वलित करने जैसा है। किसी को साक्षर बनाना किसी पुण्य से कम नहीं है। शिक्षा का जितना प्रसार होगा, उतना प्रकाश फैलेगा। - विलियम बटलर, महान आयरिश साहित्यकार



## शीव संदेश

आर्यजगत के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक स्वनामधन्य **महाशय वेगराज सिंह आर्य** (प्रधान भारतवर्षीय भजनोपदेशक परिषद) के आकस्मिक निधन से आर्यजगत में शोक की लहर दौड़ गयी है। स्व. महाशय जी के निधन से निश्चित रूप से एक सुयोग्य भजनोपदेशक कथावाचक एवं आर्यसमाज के सजग प्रहरी का स्थान रिक्त हो गया है। इनकी रग-रग में आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द की विचारधारा विद्यमान थी। वेदप्रचार ही उनका लक्ष्य था। समस्त भारत में मण्डली सहित घूम-घूम कर उन्होंने जो वैदिक धर्म और आर्यसमाज की अलख जगायी, वह चिरस्मरणीय रहेगी। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान आर्य समाज के महान पुरोधा एवं पुण्यात्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करती है तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि शोक-संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करे।

- अमर मुनि, मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

हैदराबाद स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी, पुरानी पीढ़ी के वयोवृद्ध कवि, जानेमाने आर्य भजनोपदेशक कर्मठ वैदिक पन्थानुगामी **श्री पं. प्रेमचन्द जी प्रेम जी** का दिनांक 1 अप्रैल 2014 को प्रातः 6.25 बजे दुःखद निधन हुआ। उन्होंने लगभग 96 वर्ष की दीर्घायु पायी। वे अपने पीछे एक पुत्र प्रमोदकुमार, तीन कन्याएं, दामाद, पुत्रवधू, पौत्रादि परिवार को छोड़कर संसार से विदा हुए।

60-70 वर्षों तक संपूर्ण देश में वैदिक धर्म के प्रचार हेतु तन, मन से लगे रहें। इस धर्मप्रचार कार्य में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती इन्दुशोभादेवीजी ने पूर्ण सहयोग दिया, जिनका कि 1998 में मधुमेह से देहान्त हो गया।

सन् 1938 में निजाम द्वारा 'सत्यार्थ-प्रकाश' पर लगाये गये प्रतिबंध के विरोध में किये गये सत्याग्रह में 22 वर्ष की आयु वाले किशोरवयीन प्रेमचंदजी ने भी भाग लिया। उस समय तक आप भजनोपदेशक बनकर पं. नरेन्द्रजी के आदेशानुसार निजाम के विरुद्ध अपनी कविताओं के द्वारा जनजागृति का कार्य कर रहे थे। आपने पूरे देश में तत्कालीन सभी उपदेशकों के साथ धर्मप्रचार किया। पुरानी पीढ़ी के प्रचारकों में जो धर्मधुन थी, वह आप में भी देखने मिलती है। सत्याग्रह से पूर्व आप पं. धुरेन्द्र शास्त्रीजी के साथ निजाम के विरुद्ध जनजागृति के कार्य में संलग्न

थे, मगर जैसे ही सत्याग्रह शुरू होने का समय आया, आपने इसमें सम्मिलित होने की ठान ली। सभी ने इतनी कम आयु में सत्याग्रह में शामिल होने से मना कर दिया और जनजागृति में महत्वपूर्ण कार्य को करते रहने का आग्रह किया। इस सत्याग्रह का नेतृत्व लौहपुरुष स्वामी स्वतंत्रतानन्दजी तथा महात्मा नारायण स्वामीजी कर रहे थे। पंडित जी ने भी सत्याग्रह में शामिल होने हेतु अपना हठ कायम रखते हुए भूख हड़ताल आरंभ कर दी। अन्ततोगत्वा उनके उत्साह को देखते हुए पं. धुरेन्द्र शास्त्रीजी को उनकी सिफारिश पं. नरेन्द्रजी से करनी पड़ी और पंडितजी ने भी उन्हें इजाजत दे दी। इस सत्याग्रह में आपको 25 माह की कारावास की सजा गुलबर्गा जेल में भोगनी पड़ी, जिसमें उन्होंने अनेकों यातनाएं सहन की। इस सत्याग्रह के फलस्वरूप आगे आपको आंध्र सरकार ने दस एकड़ भूमि निजामाबाद जिले के मदनूर तहसील में दो जगहों पर विभाजित कर दी, तब से आप मदनूर में ही अपने एकलौते पुत्र तथा परिवार के साथ अंतिम समय तक यहीं पर रहे।

सन् 2012 में दिल्ली में सम्पन्न अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में आपको सम्मानित किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा के सदस्यों द्वारा आपको शत शत नमन।

वैदिक सृष्टिविद्या के क्रमिक विकास को चित्रों के माध्यम से प्रदर्शित करानेवाले आर्य जगत् के प्रसिद्ध सृष्टिविज्ञानवेत्ता **श्री व्रतपालजी सिद्धांत शास्त्री** का परली में दिनांक 1 अप्रैल 2014 को मध्यरात्रि में 2.30 बजे दुःखद निधन हुआ वे 76 वर्ष के थे।

पं. व्रतपालजी बचपन से ही जिज्ञासुवृत्ति के थे। सृष्टि प्रक्रिया पर उनका चिन्तन रहा। वे पं. युधिष्ठिरजी मीमांसक व पं. आचार्य विजयपाल जी के सान्निध्य में आये। उन्हीं की प्रेरणा से इस विषय पर संशोधन जारी रखा। फलस्वरूप 1992 में उन्होंने 'वैदिक सृष्टिविज्ञान दर्शन' नामक पुस्तक लिखी, जिसमें सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति व प्रलय के विषय को सप्रमाण चित्रों में दर्शाया गया है। इस ग्रंथ में उन्होंने सृष्टिसम्बन्धी रहस्य को सुबोध, सरलशैली युक्त भाषा में प्रकट किया है। वे जगह-जगह जाकर सृष्टि विज्ञान के संदर्भ में चित्रों की प्रदर्शनी भी लगाते और प्रचार करते थे। वे हैदराबाद निवासी थे। ऐसे चिन्तनशील जिज्ञासु व्यक्तित्व के चले जाने से आर्य जगत् का काफी नुकसान हुआ है।

## आर्य समाज मानटाउन एवं महिला आर्य समाज, सवाई माधोपुर

सामवेद परायण यज्ञ एवं संगीतमय वेदकथा का भव्य आयोजन दिनांक 23 से 28 सितम्बर 2014 तक

स्थान- आर्य समाज मंदिर, 19 जवाहर नगर, सीमेंट फैक्ट्री रोड़, सवाई माधोपुर

आर्य समाज मानटाउन एवं महिला आर्य समाज सवाईमाधोपुर के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 23 सित. से 28 सित. 2014 तक दैनिक प्रातः 7.30 बजे से 10.30 बजे तक सामवेद परायण यज्ञ एवं दैविक दोष. 1.30 बजे से 5.30 बजे तक संगीतमय वेद कथा बहिन ब्रह्मचारिणी सविता आर्य (मथुरा) के द्वारा की जावेगी।

आदरणीय ब्रह्मचारिणी जी इस शहर में यहां पुनः द्वितीय बार पधार रही हैं। ये प्रखर बुद्धिशाली होने के कारण, साधना स्वाध्याय में तीव्र लग्न होने के कारण न्यून आयु में ही अध्यात्म के गूढ़ रहस्यों को जानकर हृदयस्पर्शी एवं प्रेरणादायक सरल शब्दों में संगीतमय वेदकथा करती हैं, जिसमें अपने मधुर भजनों के साथ-साथ वेद, उपनिषद् दर्शन, रामायण, महाभारत, गीता इत्यादि ग्रन्थों का दृष्टान्तों के द्वारा व्याख्या करती हैं, जो हमारे जीवन के लिए बहुत ही प्रेरणादायक हैं। अतः इस सुअवसर का अधिक से अधिक समय निकालकर अपने परिवार के साथ भाग लेकर अध्यात्म लाभ अवश्य उठावें।

आर्य मार्तण्ड

(5)

अगर आप किसी चीज को संपूर्ण रूप से जानते हैं, तो उसके बारे में दूसरों को जरूर बताएं। ज्ञान को अपने पास संजोकर रखना सरासर गलत है। ये बढ़ने की बजाय कम हो जाता है। शिक्षा का सही अर्थ यही है। - टॉयन एडवर्ड्स, अमेरिकी धर्मशास्त्री



## गायत्री मंत्र विवेचन

मनुस्मृतिकार ने ओ३म् एवं गायत्री की उत्पत्ति के सम्बन्ध में लिखा है कि - प्रजापति परमात्मा ने ओ३म् शब्द के 'अ', 'उ' और 'म' अक्षरों को (अ + उ + म = ओम्) तथा 'भूः', 'भुवः' और 'स्वः' गायत्री मंत्र की इन तीन व्याहृतियों को वेदत्रयी से दुहकर साररूप में निकाला है-

अकारं चाप्युकारं च मकारं च प्रजापतिः

वेदत्रयात्रिरदुहद् भूर्भुवः स्वरिति च ॥ (मनुस्मृति- 2.51)

उक्त श्लोक में प्रतिपादित मनु की मान्यता को निरुक्तकार यास्क ने भी विभिन्न आचार्यों के मतों का उल्लेख करते हुए पुष्टि की है- चत्वारिवाक् परिमिता पदानि (ऋग्वेद- 1.164.45) मंत्र की व्याख्या करते हुए लिखते हैं "कानि तानि चत्वारि पदानि? ओंकारः, महाव्याहृतयश्च इति आर्षम् (निरुक्त - 13.9) अर्थात् वाकस्वरूप ब्रह्म या वेद का वर्णन करने वाले वे चार पद कौन से हैं? ओंकार-अर्थात् 'ओम्' अक्षर और 'भूः', 'भुवः', 'स्वः' ये तीन महाव्याहृतियाँ। इनको यास्क ने मनु के समान महत्त्व दिया है।

'ओम्' अक्षर के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए- ऋचोक्षरे परमे व्योमन् यस्मिन् देवा अधिविश्वे निषेदुः (ऋग्वेद- 1.164.39)। मंत्र की व्याख्या करते हुए आचार्य शाकपूणि और ब्राह्मण ग्रंथ का वचन उद्धृत करते हुए कहा है कि वह 'ओम्' ही है और वह 'ओम्' अक्षर त्रयी विद्यारूप चारों वेदों का प्रतिनिधि है।

महर्षि दयानन्द ने इसी आधार पर 'ओम्' को ईश्वर को सर्वप्रमुख नाम माना है- "जो अकार, उकार और मकार के योग से 'ओम्' यह अक्षर सिद्ध है, सो यह परमेश्वर के सब नामों में उत्तम नाम है, जिसमें सब नामों के अर्थ आ जाते हैं। जैसा पिता-पुत्र का प्रेम-सम्बन्ध है, वैसे ही ओंकार के साथ परमात्मा का सम्बन्ध है। इस एक नाम से ईश्वर के सब नामों का बोध होता है।"

अकार से विराट्, अग्नि और विश्वादि। उकार से हिरण्यगर्भ, वायु और तैजस आदि मकार से ईश्वर आदित्य और प्राज्ञादि नामों का ग्रहण होता है।

महाव्याहृतियाँ- तीनों महाव्याहृतियों का अर्थ तैत्तिरीय आरण्यक के सप्तम प्रपाठक के पञ्चम अनुवाक में इस प्रकार दिया गया है- 'भूरिति वै प्राणः' यः प्राणयति चराचरं जगत् सः भूः स्वयंभूरीश्वरः- जो सब जगत् के जीवन का आधार प्राण से भी प्रिय और स्वयंभू है। उस प्राण का वाचक होके 'भूः' परमेश्वर का नाम है 'भूवरित्यपानः' 'यः सर्वं दुःखमपानयति सोऽपानः'- जो सब दुःखों से रहित जिसके संग से जीव सब दुःखों से छूट जाते हैं, इसलिये उस परमेश्वर का नाम 'भुवः' है। 'स्वरिति व्यानः' यो विविधं जगद् व्यानयति व्याप्नोति स व्यानः- जो नानाविध जगत् में व्यापक होके धारण करता है, इसलिए उस परमेश्वर का नाम 'स्वः' है।

गायत्री मंत्र- गायत्री मंत्र का प्रत्यक्षतः उल्लेख वेदत्रयी (ऋक्. यजु., साम.) में किया गया है। अथर्ववेद में गायत्री मंत्र प्रत्यक्षतः उपलब्ध आर्य मार्तण्ड

शिक्षकों को अपने अनुयायियों में खोज, रचनात्मकता, उद्यमिता और नैतिक भावना भरने का कार्य करना चाहिए। शिक्षक को अपने शिष्यों का आदर्श बनना चाहिए और इसके लिए उसे एक समर्पित और अनुशासित जीवन जीने की जरूरत होती है- एपीजे अब्दुल कलाम, पूर्व राष्ट्रपति

नहीं होता है परन्तु विभिन्न मंत्रों में प्रतीकात्मक रूप से गायत्री की विद्यमानता के गोपथ ब्राह्मण में स्पष्ट उल्लेख प्राप्त होते हैं। गायत्री मंत्र का उल्लेख ऋग्वेद में एक बार (तृतीय मण्डल के 62वें सूक्त का पंचम मंत्र) सामवेद में एक बार (उत्तरार्चिक के त्रयोदश अध्याय के खण्ड चार में) यजुर्वेद में चार बार (3-35/22-9/30-2 तथा 36.3) प्राप्त होता है।

महर्षि दयानन्द की मंत्र व्याख्या में सर्वत्र प्रसंगानुसार कुछ समानता मिलती है। संस्कार विधि में महर्षि ने यजुर्वेद के मंत्र संख्या 36/3 की व्याख्या प्रस्तुत की है जो निम्नानुसार है-

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।

धियो यो नः प्रचोदयात्। (यजुर्वेद- 36.3)

अर्थ (ओ३म्) यह परमेश्वर का मुख्य निज नाम है, जिस नाम के साथ अन्य सब नाम लग जाते हैं। (भूः) जो प्राणों का भी प्राण (भुवः) सब दुःखों से छुड़ाने हारा (स्वः) स्वयं सुखस्वरूप और अपने उपासकों को सब सुखों की प्राप्ति कराने हारा है। उस (सवितुः) सब जगत् की उत्पत्ति करने वाले, सूर्य आदि प्रकाशकों के भी प्रकाशक, समग्र ऐश्वर्य के दाता, (देवस्य) कामना करने योग्य, सर्वत्र विजय कराने हारे परमात्मा का जो (वरेण्यम्) अतिश्रेष्ठ ग्रहण और धारण करने योग्य (भर्गः) सब क्लेशों को भस्म करने वाला, पवित्र शुद्ध स्वरूप है (तत्) उसको हमलोग (धीमहि) धारण करें, (यः) यह जो परमात्मा (नः) हमारी (धियो) बुद्धियों को उत्तम गुण कर्म, स्वभावों में (प्रचोदयात्) प्रेरणा करें (संस्कार विधि- 75)।

'ओ३म्' परमेश्वर का मुख्य नाम- 'ओ३म्' परमेश्वर का सबसे मुख्य वाचक नाम है-

तस्य वाचकः प्रणवः (योगदर्शन- 1.27) अर्थात् जो ईश्वर का ओंकार नाम है, सो पिता-पुत्र के सम्बन्ध के समान है, और यह नाम ईश्वर को छोड़के दूसरे अर्थ का वाची नहीं हो सकता। तज्जपस्तदर्थभावनम् (योगदर्शन- 1.28)- इसलिए इसी नाम का जप अर्थात् स्मरण और इसी का अर्थ विचार सदा करना चाहिए कि जिससे उपासक का मन एकाग्रता, प्रसन्नता और ज्ञान को यथावत प्राप्त होकर स्थित हो।

इस संदर्भ में अन्य शास्त्रों के प्रमाण भी द्रष्टव्य हैं-

- \* ओमित्यतदक्षरमुदगीथमुपासीत्। (छान्दोग्य उपनिषद्)
- \* ओमिति-एतदक्षरमिदं सर्वं तथ्योपाख्यानम्। (माण्डुक्योपनिषद्)
- \* ओ खम्ब्रहा। (यजुर्वेद- 40/17)

गायत्री के जप करने का फल-

एतदक्षरमेतां च जपन्व्याहृतिपूर्विकाम्।

संध्योर्वेदविपिद्विप्रो वेदपुण्येन युज्यते ॥ (मनु. 2.78)

मनुस्मृतिकार के अनुसार प्रातःकालीन संध्या में बैठकर जप करके रात्रिकालीन मानसिक मलिनता या दोषों पर चिन्तन-मनन और पश्चाताप करके उन्हें आगे न करने के लिए संकल्प किया जाता है। गायत्री-जप से अपने संस्कारों को शुद्ध पवित्र बनाया जा सकता है-



पूर्वा संध्यां जपंस्तिष्ठन्नैशमेनो व्यपोहति ।

पश्चिमां तु समासीनो मलं हन्ति दिवाकृतम् ॥ (मनु. 2.102)

ब्राह्मण ग्रंथों में भी गायत्री जप के लाभ के विषय में उल्लेख प्राप्त होते हैं यथा-

गायत्री ब्रह्मवर्चसम् (तै. ब्रा. 2.7.3.3) । तेजो ब्रह्मवर्चसं गायत्री (ब्रा. 17.2.9) । वीर्यं वै गायत्री (श. ब्रा. 1.3.5.4) । तेजो वै ब्रह्मवर्चसं गायत्री तेजस्वी ब्रह्मवर्चसी भवति (ऐ. ब्रा. 1.5.28) ।

अर्थात्- गायत्री ब्रह्म तेज है, जप करने वाला तेजस्वी और ब्रह्मवर्चसी हो जाता है ।

महर्षि दयानन्द का मानना है कि केवल गायत्री मंत्र के शब्दों के बारम्बार उच्चारण मात्र से कुछ लाभ नहीं होगा, जब तक कि गायत्री मंत्र के अर्थ का ज्ञान और तदनुकूल उसका आचरण न हो ।

गायत्री के अनेक नाम / निर्वचन

गायत्री: गायत्री छंद में होने के कारण भी इसको गायत्री कहते हैं । अन्य कारण में निरुक्तकार के निर्वचन दृष्टव्य है- गायत्री गायते: स्तुति कर्मणः । (निरुक्त- 7.12), त्रिगमना वा विपरीता (निरुक्त-7.12), (त्रि+गाय को उलटा करके गायत्री एवं परोक्ष रूप से गायत्री रूप बना), त्रिभिः पादैः गयः - गमनं वर्तनं यस्याः सा गायत्री- (तीन पादों से युक्त होने के कारण गायत्री) तेजसा वै गायत्री प्रथमं त्रिरात्रं दाधार । पदैर्द्वितीयम् । अक्षरैस्तृतीयम् (ता. ब्रा. 10.5.3) (गायत्री अपने तेज से प्रथम त्रिरात्र को, अपने पादों से द्वितीय त्रिरात्र को, अपने अक्षरों से तृतीय त्रिरात्र को धारण करती है ।)

यास्क के अनुसार- 'गायतो मुखाः दुदपतत् इति ब्राह्मणम् (निरुक्त 7.12) । (गाय+पत्+रक् गायत्र - गायत्र-गायत्री) अर्थात् ऋषियों के हृदयों में (गै) उपदेश करने वाले भगवान् से सर्वप्रथम यही छंद (पत्) निकला, अतः यह छंद गायत्री नाम वाला है ।

अन्य निर्वचनों के लिए शतपथ ब्राह्मण एवं छांदोग्य उपनिषद् के वाक्यों को भी देखा जा सकता है-

सैषा गयांस्त्रे । प्राणा वै गयास्तप्राणांस्तरे ।

तद् यद् गयांस्तरे तस्माद् गायत्री नाम । (शत. 14.8.15.7)

वाग् वै गायत्री । वाग् वा इदं सर्वं भूतं गायति च त्रायते च ।

(छा. उपनिषद्- 3.12.1)

सावित्री-गायत्री मंत्र का देवता सविता है, अतः इस मंत्र को सावित्री कहते हैं ।

गुरुमंत्र- वेदारम्भ संस्कार के अवसर पर गुरु अपने शिष्य को इस मंत्र का उपदेश करते हैं । अतः इस मंत्र को गुरुमंत्र कहते हैं ।

मंत्रराज- सब मंत्रों में इस मंत्र को श्रेष्ठ बताया गया है ।

वेदमुख- यह गायत्री मंत्र वेदों में मुख्य मंत्र होने से वेदमुख कहलाता है ।

वेदमाता- अथर्ववेद में गायत्री को वेदमाता के नाम से कहा गया है-

ओउम् स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम् ।

आयुः प्राणं पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसं मह्यलोकम् ॥

(अथर्व 19.71.1)( )

आर्य मार्तण्ड

मेरी सफलता है इस बात में नहीं है कि ए या बी मेरे बारे में क्या सोचता है । मेरी सफलता इस बात में है कि मैं अपने काम से क्या कर दिखाता हूँ । शिक्षा हमारो इसी दिशा में मार्गदर्शन करती है ।- होमी जहांगीर भाभा, वैज्ञानिक

कामधेनु: गायत्री मंत्र के जाप से इच्छाएँ पूर्ण हो जाती हैं अतः इसे कामधेनु कहा जा सकता है अनेन जपोपासनादिकर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्य सिद्धिर्भवेन: (महर्षि दयानन्द-संध्या विषय) ।

गायत्री मंत्र सम्बन्धी भ्रान्तियाँ: गायत्री मंत्र के सम्बन्ध में समाज में कुछ मिथ्या ज्ञान प्रचलित है, यथा गायत्री मन्त्रोच्चार पूर्वक सूर्य को अर्घ्य देना-यहाँ गायत्री मंत्र को भौगोलिक पदार्थ सूर्य के लिए समझना एक भ्रान्ति मात्र है । गायत्री मंत्र में प्रयुक्त समस्त विशेषण (ओउम्, भूर्भुवः, तत्, सवितुः वरेण्यम्, भर्गः आदि) परमपिता परमात्मा के स्वरूप को बताते हैं । उक्त विशेषण एक भौतिक पदार्थ सूर्य के नहीं हो सकते । यह सूर्य ब्रह्म नहीं है अपितु जो सूर्य में भी व्यापक है वही ब्रह्म है । इस संदर्भ में यजुर्वेद का मंत्र द्रष्टव्य है, जिसमें कहा गया है "जो सूर्य में भी व्यापक पुरुष है, वह मैं सर्वत्र व्यापक और सबसे बड़ा 'ओउम्' नाम वाला ब्रह्म हूँ- योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहं । ओ३म् खं ब्रह्म (यजु. 40.17) ।

गायत्री मंत्र का ऋषि सविता है, लौकिक संस्कृत में 'सविता' शब्द से सूर्य का ग्रहण किया जाता है । किन्तु वैदिक भाषा में 'सविता' सम्पूर्ण जगत् की उत्पत्ति करने वाले ब्रह्म का ही वाचक है ।

अन्यभ्रान्तियों में- गायत्री को स्त्री स्वरूपा समझना, शिवरूपा गायत्री, विष्णुरूपा गायत्री का ध्यान आदि अनेक विकृत विचारधाराएँ समाज में प्रचलित हैं । गायत्री के मूल स्वरूप को समझने पर उक्त मिथ्या धारणाएँ स्वतः नष्ट हो जाती हैं ।

डॉ. सुधीर शर्मा

## आर्य समाज, सुमेरपुर

आर्य समाज सुमेरपुर जिला पाली ( राज. ) का 38वाँ वार्षिक उत्सव एवं वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन दिनांक 18.8.2014 से 24.8.2014 तक हुआ । जिसमें प्रति दिन 8 बजे से 9.30 बजे तक यजुर्वेदीय यज्ञ आचार्य योगेन्द्र जी याज्ञिक होशंगाबाद ( म.प्र. ) के ब्रह्मत्व में हुआ । आर्यकन्या गुरुकुल की बालिकाओं द्वारा सस्वर वेदपाठ किया गया । तत्पश्चात् 9.30 बजे से 11.30 बजे तक भजन, प्रवचन हुए । रात्रि में 8 बजे से 10.30 बजे तक श्री कुलदीप जी आर्य भजनोपदेशक बिजनौर ने भजनों के माध्यम से विभिन्न विषयों पर प्रकाश डालते हुए सत्यार्थ प्रकाश में उल्लेखित ऋषि के वाक्यों को दोहराते हुए कहा कि किया हुआ अधर्म व्यक्ति के सुखों के मूल को नष्ट कर देता है ।

आचार्य योगेन्द्र जी याज्ञिक ने अपने प्रवचनों में पारिवारिक सामाजिक सुधार एवं राष्ट्र के प्रति जागरूक रहने की प्रेरणा दी । श्रोताओं ने भजन व प्रवचनों की सराहना की । प्रातःकाल एवं रात्रि के कार्यक्रमों में नगर के गणमान्य लोगों से पूरा हाल भर जाता था । दिनांक 24.8.2014 को पूर्णाहुति के अवसर पर ऋषि लंगर का भी आयोजन किया । आर्य समाज के प्रधान श्री गणेशमल विश्वकर्मा एवं मंत्री श्री गुलाबसिंह राजपुरोहित ने विद्वानों का एवं श्रोतावृन्दों का आभार प्रकट किया । कार्यक्रम का संचालन पं. केशव देव शर्मा ने किया ।

गुलाब सिंह राजपुरोहित, मंत्री



## कार्यालय आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, जयपुर

### सूचना

समस्त आर्यसमाजों जो आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध हैं अर्थात् जिनका नाम 2013 में निर्मित अंतिम मतदाता सूची में अंकित है, उन समस्त आर्य समाजों को प्रतिनिधि सभा का सम्बद्धता प्रमाण-पत्र दिया जाना सुनिश्चित किया गया है। अतः एतदर्थ आर्यसमाजों के मंत्रियों/प्रधानों/अधिकारियों को निर्देशित किया जाता है कि वे अपने आर्य समाज के समस्त रिकॉर्ड यथा आय-व्यय का विवरण, साप्ताहिक सत्संग रजिस्टर की छायाप्रति, भूमि-भवन सम्बन्धी दस्तावेज, समस्त सदस्यों की सूचीमय नाम, पिता का नाम, आवास संकेत, व्यवसाय, दूरभाष संख्या के, सभा को देय दशांस, निश्चित कोटी, आर्य मार्तण्ड का शुल्क, बैंक खाते की डिटेल् एवं सभा द्वारा निर्धारित सम्बद्धता प्रमाण-पत्र शुल्क (ग्राम पंचायतों के क्षेत्र में संचालित आर्य समाज 101/-रु. एवं शहरी निकाय तथा नगरपालिका, नगरनिगम, नगर विकास न्यास के परिक्षेत्र में संचालित आर्य समाज 1100/-रु.) के साथ अपना प्रार्थना पत्र सभा कार्यालय में अविलम्ब प्रस्तुत करें जिससे समय पत्र सम्बद्धता प्रमाण पत्र जारी किया जा सके।

-सुधीर शर्मा, कार्यालय मंत्री

संस्कृत-संस्कृत संस्थापक-आर्य समाज के लिए दान-दान

**आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान**  
(राजस्थान राज्य में स्थापित/संचालित आर्य समाजों की विधायक एवं प्रतिनिधि संस्था)  
कार्यालय - राजा पार्क, जयपुर - 302004 (राजस्थान)  
(सोसायटी रजिस्ट्रेशन एक्ट-12 अक्टूबर 1960 के अन्तर्गत स्थापित)

**सम्बद्धता प्रमाण-पत्र**

प्रमाणित किया जाता है कि आर्य समाज ..... राजस्थान, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के सम्बद्ध है। उक्त आर्य समाज का पंजीयन क्रमांक ..... है।

**प्रमाणितकर्ता**

सिद्धार्थ शर्मा  
अध्यक्ष

डॉ. सुधीर शर्मा  
कार्यालय मंत्री

अमरमुनि  
सचिव

दिनांक: .....

1. इस पत्र को प्राप्त करने के बाद उसे अपने आर्य समाज में भेजें।  
2. इस पत्र को अपने आर्य समाज में भेजें।  
3. इस पत्र को अपने आर्य समाज में भेजें।  
4. इस पत्र को अपने आर्य समाज में भेजें।

## शारदा देवी छोटू सिंह आर्य चैरिटेबल ट्रस्ट, अलवर

आर्य समाज, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में स्वतन्त्रता सेनानी स्व. श्री छोटू सिंह आर्य संस्थापक अध्यक्ष आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर की स्मृति एवं स्व. श्रीमती दिव्या आर्य धर्मपति श्री प्रमोद आर्य की द्वितीय पुण्यतिथि की पावन स्मृति में अलवर जिले के हैदय क्षत्रिय स्वजातीय मेधावी छात्र एवं छात्राओं को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम सायं 4:00 बजे यज्ञ से प्रारंभ हुआ।



श्रीमती कमला शर्मा निदेशक, आर्य कन्या विद्यालय समिति, श्रीमती इन्द्रा आर्य, ट्रस्टी-शारदा देवी छोटू सिंह आर्य चैरिटेबल ट्रस्ट तथा श्रीमती सुमन आर्य, डायरेक्टर छोटू सिंह आर्य धर्मार्थ समिति, अलवर ने माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान/केन्द्रीय बोर्ड सैकण्डरी परीक्षा 2013-14 में सर्वश्रेष्ठ तीन स्थान प्राप्त करने वाले हैदय क्षत्रिय स्वजातीय - दक्ष्य वर्मा पुत्र श्री महेन्द्र सिंह को 2100/-रु., पूर्णिमा धार पुत्री श्री संजय कुमार को 1500/-रु. तथा पूजा कुमारी पुत्री श्री राजेश कुमार को 1100/-रु. की नकद राशि देकर पुरस्कृत किया गया।

शारदा देवी छोटू सिंह आर्य चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा आर्य कन्या विद्यालय समिति द्वारा संचालित विद्यालयों में अध्ययनरत आर्थिक रूप से कमजोर आर्य पब्लिक स्कूल स्वामी दयानन्द मार्ग की स्नेहा शर्मा पुत्री श्री लक्ष्मण शर्मा एवं आर्य बा.उ.मा.वि. की विशाखा तनेजा पुत्री श्री राजेन्द्र तनेजा तथा ऋतु मिश्रा पुत्री श्री गौरी दत्त मिश्रा का विद्यालय शिक्षण शुल्क जमा करवाकर सहायता प्रदान की गई।

इस अवसर पर सर्वश्री प्रदीप आर्य, अमरमुनि, प्रमोद आर्य, सौरभ आर्य, दिविशा आर्य, मानसिंह जायसवाल, कै. रघुनाथ सिंह, बमजेंद्र देव आर्य, हेमराज कल्ला, रामनारायण सैनी, शिवकुमार कौशिक, महेन्द्र वर्मा, संजय कुमार, राजेश कुमार आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। अंत में दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

अशोक कुमार आर्य

मुख्य ट्रस्टी शारदा देवी छोटू सिंह आर्य चैरिटेबल ट्रस्ट, अलवर



आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर सम्पादक एवं प्रकाशक अमरसिंह आर्य, मंत्री- आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

प्रेषक :

सम्पादक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

राजा पार्क, जयपुर - 302004

यूको बैंक A/c No. : 18830100010430 तिलक नगर, जयपुर

प्रेषित

आर्य मार्तण्ड विशेष - आर्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। उनसे सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।